

# डॉ. फ्रेड पुटनम, भजन, व्याख्यान 1

© 2024 फ्रेड पुटनम और टेड हिल्लेब्रांट

नमस्ते, हमारी लाइब्रेरी में आपका स्वागत है। मेरा नाम फ्रेड पुटनम है। मुझे स्तोत्रों की पुस्तक पर इस पाठ्यक्रम के लिए आपके साथ यहाँ आकर खुशी हो रही है।

मैं 20 वर्षों से अधिक समय से हिब्रू और ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ा रहा हूँ और मैं आपके साथ ये कुछ घंटे बिताने के लिए उत्सुक हूँ। जब हम भजनों की पुस्तक के बारे में बात करते हैं, तो हम वास्तव में किस पर चर्चा कर रहे हैं? खैर, इसके अलग-अलग नाम हैं। हम शायद इसे स्तोत्र के रूप में सोचते हैं, जो वास्तव में इसके ग्रीक शीर्षक सेप्टुआजेंट से आया है, जो ईसा से लगभग 250 साल पहले किया गया अनुवाद था।

लेकिन हिब्रू में एक और शीर्षक है, तहिलीम, जिसका अर्थ है प्रशंसा। और इसलिए वे दोनों, स्तोत्र या स्तोत्र, जिसका अर्थ है वे कविताएँ जो स्तोत्र या एक प्रकार की छोटी वीणा के संगीत पर गाई जाती हैं, यूनानियों ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की। और प्रशंसा इस बात की है कि रब्बियों ने इसके बारे में कैसे सोचा।

और ये दो शीर्षक हमें एक मोटा अंदाज़ा देते हैं कि हमारे पास क्या है। कई सौ वर्षों की अवधि में लगभग डेढ़ सौ कविताएँ लिखी गईं और वे विभिन्न प्रकार की कविताओं से बनी हैं। मैं एक सौ पचास के बारे में इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि, कुछ लोगों की राय में, भजन 9 और 10 या भजन 42 और 43 जैसी कुछ कविताएँ वास्तव में एक साथ हैं।

वे वास्तव में एक ही कविता हैं। वे अलग-अलग भजन नहीं हैं। और यदि हम लैटिन वुल्फोट या ग्रीक सेप्टुआजेंट जैसे अन्य अनुवादों को देखें, तो हम पाते हैं कि वे भजनों को भी अलग-अलग तरीके से विभाजित करते हैं।

इसलिए, जब आप कोई टिप्पणी देख रहे हों या वेब पर सर्फिंग कर रहे हों तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि क्या कोई वुल्फोट के बारे में बात कर रहा है। उदाहरण के लिए, यदि आप कैथोलिक विश्वकोश पढ़ रहे हैं, तो भजन संख्याएँ भिन्न हो सकती हैं। और इसलिए वे एक श्लोक के बारे में बात कर रहे हैं और आपको लगता है कि यह वह नहीं है जो यह कहता है।

और आप सही हैं। यदि आप प्रोटेस्टेंट बाइबिल देख रहे हैं तो यह वह श्लोक नहीं है जिसे आप देख रहे हैं। इसलिए, अपने स्रोतों से सावधान रहें और वे भजनों के बारे में कैसे सोच रहे हैं।

इसका एक और पहलू, संदर्भ कार्यों के संदर्भ में, यह है कि हिब्रू पाठ में, शीर्षक, अब यह वह शीर्षक नहीं है जिसे कुछ अनुवाद मदद के लिए प्रार्थना और उसके उत्तर के लिए प्रशंसा या ऐसा कुछ देते हैं। लेकिन शीर्षक जो डेविड या कोरह के पुत्रों द्वारा या ऐसा कुछ कहता है, जो कि अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में है, वास्तव में पद एक है। और इसलिए, सभी पद्य संख्याएँ उनकी अंग्रेजी संख्या से एक-एक हैं।

तो फिर, यदि आप कोई टिप्पणी या कोई अन्य संदर्भ कार्य देख रहे हैं, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि क्या वे अंग्रेजी छंदों या हिब्रू छंदों के बारे में बात कर रहे हैं? क्योंकि अन्यथा, यह काफी निराशाजनक हो सकता है जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं। अब, इन कविताओं में हमारे पास क्या है? खैर, हालाँकि हम स्तोत्र को एक भजन पुस्तक या प्रार्थनाओं की पुस्तक के रूप में सोच सकते हैं, वास्तव में 150 में से केवल 90 प्रार्थनाएँ ही ईश्वर को संबोधित हैं। अन्य 60 प्रभु के बारे में प्रार्थनाएँ हैं, लेकिन वे वास्तव में उन्हें संबोधित नहीं करती हैं।

या कभी-कभी लगभग पाँच या छह ऐसे होते हैं जहाँ पहले 10 छंद भगवान के बारे में होंगे और फिर अंतिम छंद कहते हैं, और आप भगवान हमारे हाथों के काम की पुष्टि करेंगे या ऐसा कुछ। लेकिन लगभग 60% स्तोत्र प्रार्थनाओं से बना है और अन्य 40% भगवान की स्तुति करने, उनकी पूजा करने के लिए चिंतन या ध्यान या उपदेश हैं, लेकिन वास्तव में इस अर्थ में प्रार्थनाएँ नहीं हैं कि वे उन्हें संबोधित हैं। तीन सामान्य प्रकार हैं।

हम इस बारे में थोड़ी देर बाद और अधिक विस्तार से बात करने जा रहे हैं। लेकिन ऐसे भजन हैं जिनके बारे में हम कह सकते हैं कि हम खुश हैं, पूजा और स्तुति के भजन, भजन 29 की तरह, प्रभु का गुणगान करो, हे पराक्रमी पुत्रों, प्रभु का गुणगान करो, महिमा और शक्ति प्रभु का गुणगान करो, महिमा उसके नाम के कारण है . यह प्रशंसा का एक भजन है।

या भजन 93 या 96 या 98, वास्तव में दुनिया का आनंद इसी पर आधारित है। या भजन 100, जिसे शायद आपने पुराने सौवें के रूप में चर्च में गाया था, पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग प्रसन्न स्वर में प्रभु के लिए गाते हैं। ओह, शायद एक तिहाई से कुछ अधिक भजन ऐसे ही हैं।

फिर ऐसे बहुत से भजन हैं जिन्हें हम दुखद कविताओं के रूप में सोच सकते हैं। यह इस अर्थ में दुखद है कि वे भजनहार के साथ बहुत परेशानी में शुरू होते हैं और भगवान से उसे बचाने के लिए प्रार्थना करते हैं, चाहे वह दुश्मनों से हो या बीमारी से या किसी अन्य प्रकार की समस्या से। उदाहरण के लिए, भजन 10 कहता है, तुम दूर क्यों खड़े हो? संकट के समय तुम अपने आप को क्यों छिपाते हो? दुष्ट लोग अभिमान में हैं, दुष्ट लोग दुखियों के पीछे भागते हैं।

उन्हें उनकी साजिशों में फंसने दीजिए. और इसलिए, भजनहार कहता है, हे प्रभु, मैं संकट में हूँ, मेरी सहायता करो। और फिर वह मांगता है, देता है, आमतौर पर भगवान से थोड़ा बहस करता है, कहता है, यही कारण है कि आपको मेरी मदद करनी चाहिए।

और फिर अंत में, वह आता है और कहता है, आपके लिए धन्यवाद, और जो प्रतिज्ञा मैंने की थी उसे मैं पूरा करूँगा और आपकी अच्छाई की गवाही दूँगा। और शायद स्तोत्र का एक तिहाई हिस्सा ऐसा ही है। भजनों में से लगभग 50 से 55 कविताओं को ये दुखद या प्रार्थनापूर्ण कविताएँ माना जा सकता है।

फिर एक और काफी बड़ा समूह है जो न तो खुश है और न ही दुखी है, लेकिन वे बस कुछ के बारे में सोच रहे हैं। इसलिए, भजन 1, उदाहरण के लिए, एक बहुत ही परिचित भजन, वास्तव में लोगों को पूजा करने के लिए नहीं बुला रहा है। यह मदद की गुहार नहीं है।

यह प्रभु के बारे में है. यह उसे संबोधित नहीं है. और इसके बजाय, ऐसा लगता है जैसे कोई कवि धर्मी और दुष्ट के बीच के रिश्ते और उनके बीच क्या अंतर है, इस पर विचार कर रहा है।

और इसलिए, वह उस विचार का पता लगाने के लिए एक कविता लिखते हैं। और ऐसी बहुत सी कविताएँ हैं। भजन 2 भी कुछ ऐसी ही चीज़ है।

भजन 19, परमेश्वर के वचन के बारे में एक बहुत प्रसिद्ध कविता। अथवा भजन 119 भी वैसा ही है। भजन 121, जिस पर हम थोड़ा विचार करेंगे।

तो, हमारे पास इस प्रकार के चिंतनशील या ध्यानात्मक या निर्देशात्मक हैं, हो सकता है, हम उनके बारे में उस तरह से सोचना चाहें। अब, जब हम स्तोत्र को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति में अध्याय विभाजनों को, यानी स्वयं स्तोत्र को, स्व-निहित स्वतंत्र इकाइयों के रूप में देखना काफी लुभावना है। लेकिन जब हम पूरे स्तोत्र को देखते हैं और स्तोत्र के शीर्षकों को देखते हैं जिनका मैंने एक मिनट पहले उल्लेख किया था, जब हम स्तोत्र के प्रकारों को देखते हैं, तो हमें ऐसे पैटर्न दिखाई देने लगते हैं जो दिखाते हैं कि स्तोत्र की कल्पना वास्तव में की गई थी। एक किताब और एक किताब के रूप में लिखा गया।

यह सिर्फ 150 कविताएँ नहीं थीं जिन्हें किसी ने पाया और एक साथ चिपका दिया और कहा, ठीक है, हम इन्हें रखेंगे और इसे अपने भजन में बनाएंगे। अब, परंपरागत रूप से, स्तोत्र को पाँच पुस्तकों में विभाजित किया गया है। भजन 1 से 41, भजन 42 से 72, 73 से 89, 90 से 106, और 107 से 150।

और लगभग कोई भी अनुवाद जिसे आप देखेंगे पहले कहेंगे, भजन 43 कहें, यह पुस्तक दो कहेगा। वे इसी का जिक्र कर रहे हैं। वे विभाजन पुराने हैं, हम नहीं जानते कि वे कितने पुराने हैं, उनका उल्लेख ईसा मसीह के समय में रब्बियों द्वारा किया जाता है, यहाँ तक कि ईसा के समय से भी पहले।

तो वे बहुत पुराने विभाजन हैं। और जब हम उन विभाजनों को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि वे स्वयं बेतरतीब नहीं हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, पुस्तक एक में 41 भजनों में से 38, शीर्षक के अनुसार, डेविड के बताए गए हैं।

अब, मैं एक मिनट पीछे जाकर उस शब्द के बारे में बात करना चाहता हूँ। कई अनुवादों में, आप वाक्यांश देखेंगे, डेविड का एक भजन, कोरह के पुत्रों का एक भजन, या ईतान या सोलोमन या किसी और का, या मूसा की प्रार्थना। हम वास्तव में नहीं जानते हैं कि मूल रूप से इसे किसके द्वारा लिखे गए अर्थ के रूप में सोचा गया था, इस अर्थ में कि हम कह सकते हैं कि टीएस एलियट ने वेस्टलैंड लिखा था, या यदि इसका अर्थ डेविड की शैली में है या डेविड को समर्पित है या डेविड द्वारा कमीशन किया गया है या इसके द्वारा अधिकृत है। वह या उसके द्वारा लिखित।

वहाँ हिब्रू में प्रयुक्त पूर्वसर्ग का उपयोग किया जा सकता है, यह बाइबिल में अब तक का सबसे आम पूर्वसर्ग है, और इसका उपयोग कई, कई अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है। ठीक वैसे ही जैसे यदि आपको कभी किसी अंग्रेजी शब्दकोश में इस शब्द को देखने का अवसर

मिलता है, विशेष रूप से यदि आप इसे ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी जैसी किसी चीज़ में देखते हैं, तो प्रविष्टि पृष्ठों और पृष्ठों के लिए चलती रहती है क्योंकि शब्द का अर्थ ऐसा हो सकता है अंग्रेजी में बहुत सी बातें. अब हम उन सभी संभावनाओं के बारे में सोचे बिना इसका उपयोग करते हैं।

हम बस बात करते हैं, और भाषा बोलते हैं। उसी तरह, जिस पूर्वसर्ग का डेविड के भजन का अनुवाद किया जाता है, वह यह पूर्वसर्ग है जिसका आमतौर पर हिब्रू में पूर्वसर्ग में अनुवाद किया जाता है जिसे आमतौर पर हमारे अंग्रेजी बाइबिल में अनुवादित किया जाता है। लेकिन यह समझने के लिए कि इसका क्या मतलब है, डेविड के लिए एक भजन, डेविड के लिए एक भजन, या जो भी हो, और परंपरा के प्रकाश में, पुरानी परंपरा, कि इस पूर्वसर्ग का उपयोग वास्तव में लेखकत्व दिखाने के लिए किया जा रहा है, हम इन भजन शीर्षकों को देख सकते हैं और कुछ विचार प्राप्त कर सकते हैं कि पुस्तक वास्तव में कैसे व्यवस्थित की गई थी।

क्योंकि यह लगभग तय है कि इसे मूल लेखकों द्वारा व्यवस्थित नहीं किया गया था क्योंकि कुछ भजन डेविड और सुलैमान के तहत एकजुट राजशाही के समय से आए थे, और उनमें से कुछ सैकड़ों साल बाद निर्वासन के बाद आए थे। तो किताब को समय के साथ धीरे-धीरे एक साथ रखा गया होगा। दरअसल, हमारे पास इसका बहुत मजबूत सुराग है।

भजन 72, श्लोक 20 के अंत में, यह कहा गया है, यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएँ समाप्त हो गई हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि उन्होंने सोचा था कि उन्होंने उन सभी को प्राप्त कर लिया है। हालाँकि वास्तव में, भजनों का एक पूरा समूह बाद में दिखाई देता है जो डेविड का एक भजन कहता है। तो, इससे पता चलता है कि इसे जमा करने की प्रक्रिया संभवतः काफी लंबी अवधि में हुई थी।

यहां तक कि मृत सागर स्क्रॉल भी हमें यह देखने में मदद करते हैं क्योंकि हम भजन संहिता की पुस्तक की पांडुलिपियों को देखते हैं, और कुछ पांडुलिपियों में भजन उसी क्रम में हैं। खैर, सबसे पहले, ऐसी कोई पांडुलिपियाँ नहीं हैं जिनमें संपूर्ण स्तोत्र हो। ये छोटे-छोटे टुकड़े हैं जिन्हें हम पा सकते हैं।

लेकिन जहां हम पहचान सकते हैं कि वे कौन से भजन हैं, और किस भजन के कौन से छंद हैं, हम पाते हैं कि कभी-कभी क्रम वही होता है, और कभी-कभी हमारे पास मौजूद भजन के समान नहीं होता है। आम तौर पर कहें तो, स्तोत्र में पांडुलिपियाँ जितनी पहले की होती हैं, यानी, स्तोत्र 1 से लेकर 72 तक, विशेष रूप से किताबों की पहली जोड़ी, उनकी व्यवस्था उतनी ही अधिक सुसंगत होती है। जैसा कि हमें बाद में स्तोत्र में मिलता है, व्यवस्थाएँ भिन्न हैं।

बेशक, मुझे कहना होगा, हम वास्तव में नहीं जानते कि वे स्तोत्र के स्क्रॉल थे। हम यह तब तक नहीं जान सकते जब तक हमें संपूर्ण स्क्रॉल नहीं मिल जाता। उदाहरण के लिए, वे सिर्फ एक भजन पुस्तक हो सकते हैं, कि हमारे किसी भी चर्च में एक भजन उठाकर यह कहना नाजायज होगा, ओह, ये सभी 20वीं सदी के ईसाई भजन हैं।

बिल्कुल नहीं। किसी ने अध्ययन किया, उन्हें चुना, चुना कि उन्हें किस क्रम में रखा जाए, उन्हें कैसे व्यवस्थित किया जाए, आदि। लेकिन यह एक चयन है।

हो सकता है कि ये स्कॉल, यहां तक कि मृत सागर की गुफाओं से भी, इसी का प्रतिनिधित्व करते हों। यह बहुत अस्पष्ट है। मैं जानता हूँ कि यह संभवतः किसी भी चीज के लिए खुद को प्रतिबद्ध न करने का विद्वानों का तरीका जैसा लगता है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, मैं बाहर निकलने और केवल यह कहने के बजाय सतर्क रहना चाहूंगा कि यह इसी तरह है क्योंकि हम वास्तव में नहीं जानते हैं कि यह उन स्कॉल का कार्य था। खैर, जब हम किताबों को देखते हैं, स्तोत्र की ये पाँच किताबें, तो हम पाते हैं कि पहले 72 स्तोत्रों में से 55 का श्रेय डेविड को दिया जाता है। वे इसे डेविड के बारे में या डेविड के लिए या डेविड के लिए या जो कुछ भी कहते हैं।

लेकिन अगली दो पुस्तकों, भजन 73 से 106 में, केवल तीन भजन डेविड के बताए गए हैं। और आखिरी किताब में, 107 से 150 तक, तीन भजनों का एक समूह है, 108 से 110 तक। और फिर किताब के अंत में, 137 से 145 तक भी डेविड को बताया गया है।

तो, आखिरी किताब में डेविडिक भजनों के दो छोटे संग्रह हैं। लेकिन मूल रूप से, डेविडिक भजन, डेविड को सौंपे गए 73 भजनों में से 55, पहली दो पुस्तकों में पाए जाते हैं, जो सुझाव देते हैं कि वे दो, और चूंकि वे इस वाक्यांश के साथ समाप्त होते हैं कि यिश्ई के पुत्र डेविड की प्रार्थनाएं समाप्त हो जाती हैं, भजन 72 के अंत में, यह पता चलता है कि वह अपने आप में एक संग्रह था। और फिर कुछ समय बाद अन्य भजन एकत्र किए गए।

दूसरी ओर, हम दो और तीन किताबों को देखते हैं और भजन 43 और 89 के बीच, उनमें से 13 कोरह के बेटों द्वारा लिखी गई हैं, जो गाना बजानेवालों के नेताओं में से एक हैं जिनके बारे में हमने चर्च क्रॉनिकल्स की किताब में पढ़ा है। फिर, वे छोटे संग्रह हैं, वे सभी एक पंक्ति में आते हैं, या शायद बीच में एक भजन है जो उन्हें बाधित करता है। लेकिन एक नियम के रूप में, भजनों का एक समूह है और वे सभी शुरू होंगे, कोरह के पुत्र, कोरह के पुत्र, कोरह के पुत्र, जो दर्शाता है कि किसी ने बैठकर निर्णय लिया कि ये भजन इस शीर्षक के कारण एक साथ हैं।

फिर हमें पुस्तक तीन में भी यही चीज़ मिलती है। एक और बड़ा हिस्सा यह है कि वे आसफ द्वारा लिखे गए हैं, आसफ के भजन। तो वास्तव में, उस तीसरी पुस्तक में, कोरह और आसाप के पुत्रों ने 17 में से 15 भजन लिखे।

जबकि डेविड ने केवल एक ही लिखा था, जबकि उन्होंने पहली कुछ पुस्तकों का बड़ा भाग लिखा था। और हम यह भी पाते हैं कि स्तोत्र का आकार लेखक द्वारा इस प्रकार बनाया गया है कि पहली पुस्तक में केवल तीन अनाम स्तोत्र हैं। यानी, उन्हें अनाथ स्तोत्र कहा जाता है क्योंकि उनके पास ऐसा कोई शीर्षक नहीं है जो डेविड का स्तोत्र या उसके जैसा कुछ कहता हो।

उन्हें अनाथ कहा जाता है। वहाँ तीन हैं, भजन 1, भजन 2, और भजन 33। पुस्तक दो में चार अनाथ भजन हैं।

पुस्तक तीन में कोई नहीं है। और फिर चौथी और पाँचवीं किताबों में 42 अनाथ भजन हैं। और यह पुस्तक चार में 14 है, और पुस्तक पांच में 28 है।

इसलिए, हम पाते हैं कि लेखकों वाले भजन शुरुआत में होते हैं और बिना लेखकों वाले भजन अंत में अधिक सामान्य हो जाते हैं। स्तोत्र की व्यवस्था का एक और दिलचस्प पहलू यह है कि अगर हम खुश या दुखद स्तोत्र, मान लीजिए, या प्रार्थना और स्तुति या ऐसा कुछ के बारे में बात करते हैं, तो हम पाते हैं कि पहली तीन पुस्तकों में, अधिकांश स्तोत्र, उनमें से 50 से अधिक, ये याचिका प्रार्थनाएँ हैं। भगवान हमारी मदद करें, हम मुसीबत में हैं।

भगवान हमें बचाता है। हे प्रभु, कृपया मुझे मेरे शत्रुओं से बचाएं। और केवल कुछ ही, लगभग 20 या इसके आसपास, खुश होते हैं या प्रशंसा के भजनों की प्रशंसा करते हैं, उदाहरण के लिए भजन 29।

लेकिन पिछली दो पुस्तकों में, हम पाते हैं कि 40, यानी दो-तिहाई भजन, खुशियाँ देने वाले हैं। स्तुति और आराधना या विश्वास और आराधना के भजन। और उनमें से केवल 15 भजन ऐसे हैं जो ईश्वर से मदद मांग रहे हैं।

ताकि प्रार्थनाओं से समग्र रूप से स्तोत्र में एक आंदोलन हो, जिसमें भगवान से कवि को बचाने के लिए प्रार्थना की जाए ताकि भगवान के सृजन के कार्यों और मुक्ति या मुक्ति या विजय के लिए प्रशंसा के स्तोत्र हों। और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि हताशा से आत्मविश्वास तक या प्रार्थना से स्तुति की ओर वही गति लगभग सभी भजनों में पाई जाती है जो प्रार्थनाएँ हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, भजन 18, यह कहकर शुरू होता है, हे भगवान, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मेरी ताकत, और हम एक मिनट में इस पर गौर करेंगे।

यह तुरंत कहा जाता है, मृत्यु की रस्सियों ने मुझे घेर लिया है, अधार्मिकता की लहरों ने मुझे भयभीत कर दिया है, अधोलोक की रस्सियों ने मुझे घेर लिया है, और भजनकार वास्तव में बुरी मुसीबत में है। लेकिन भजन के अंत में, वह कहता है, प्रभु जीवित है, मेरी चट्टान धन्य है, मेरे उद्धार का परमेश्वर महान है, वह परमेश्वर जो मेरे लिए प्रतिशोध लेता है और लोगों को मेरे अधीन कर देता है। और भजन के अंत में, डेविड इस हताशा से पूरी तरह से पलट गया है, जिसे हम छंद चार से छह में पाते हैं, या बाद में भी जब वह उन कुत्तों के बारे में बात करता है जो मुझे घेर रहे हैं और बैल जो मुझे धमकी दे रहे हैं, उसके आत्मविश्वास पर भगवान और भगवान ने उसके लिए क्या किया है या क्या करेंगे या क्या कर रहे हैं।

तो, इन स्तोत्रों में और समग्र रूप से स्तोत्र में हमारी एक बहुत ही निश्चित गति है। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि कभी कोई अपवाद नहीं होता। बेशक, वहाँ हैं।

यह बिल्कुल इतनी सख्ती से व्यवस्थित नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से लगता है कि यह सब बहुत विशेष रूप से आयोजित किया गया था। मैं कुछ निष्कर्षों पर वापस आने जा रहा हूँ जिन्हें हम इसके बारे में निकाल सकते हैं। लेकिन मुझे एक और सवाल पूछने दीजिए।

प्राचीन इज़राइल में वास्तव में स्तोत्र का उपयोग कैसे किया जाता था? बाइबिल के समय में यह कैसे कार्य करता था? आप इसे इज़राइल की प्रार्थना पुस्तक कहते हुए सुनेंगे। आप इसे इज़राइल का भजन या मंदिर का भजन या तम्बू या मंदिर की प्रार्थना पुस्तक या ऐसा ही कुछ कहते हुए सुनेंगे। लेकिन वास्तव में, हालांकि बाइबिल के कई अनुच्छेद हैं जो लोगों के चिल्लाने या गाने या जप करने के बारे में बात करते हैं, और वैसे, यह सिर्फ एक स्वतंत्र बात है, इस शब्द का अनुवाद गीत और गायन के रूप में किया जाता है।

संज्ञा और क्रिया का अनुवाद गीत और गायन के रूप में किया जाता है, लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते कि उनका मतलब गीत है या गाना, जैसा कि हम उनके बारे में सोचते हैं। यह लगभग निश्चित है कि यह मोज़ार्ट की तरह नहीं लग रहा था। हो सकता है कि यह ग्रेगोरियन मंत्र की तरह अधिक सुनाई दे रहा हो, या हो सकता है कि यह बिल्कुल भी ऐसा न लगे।

शायद हमें वास्तव में मध्य पूर्व में जाने और उन्हें बौजौकी और अन्य वाद्ययंत्र बजाते हुए सुनने और उनकी शैली के संगीत को सुनने की ज़रूरत है। या शायद मुझे लगता है कि यह थोड़ा असंभावित भी है क्योंकि हम 2,500 से 3,000 वर्षों की दूरी के बारे में बात कर रहे हैं। हम वास्तव में नहीं जानते कि प्रदर्शन कैसा होगा।

जब हम वाद्ययंत्रों, झांझों, विभिन्न प्रकार की तुरही और सींगों, धातु और जानवरों के सींगों और कुछ प्रकार के तार वाले वाद्ययंत्रों के बारे में सोचते हैं, और शायद कुछ संकेतों के बारे में सोचते हैं कि हमारे पास गाने वाले लोग हैं, तो कम से कम कुछ भजन शीर्षकों की व्याख्या गायन के रूप में की जाती है। एक सप्तक, इसलिए एक स्वर में गाना। हम वास्तव में नहीं जानते कि वे गाने कैसे होंगे। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि इसके बारे में हमारी सोच के लिए यह अधिक उपयोगी होगा यदि हम बाइबल पढ़ते समय, उस दुनिया में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे हैं जिसका बाइबल हिस्सा थी, शायद मंत्र जैसे शब्द का उपयोग करने के लिए।

यह बहुत अधिक हो सकता है, संभवतः अभी भी भ्रामक है, लेकिन गायन जितना भ्रामक नहीं हो सकता है। इसलिए हम बाइबल में कई स्थानों पर पढ़ते हैं, और मंदिर के संबंध में लोगों द्वारा इन वाद्ययंत्रों को बजाने और गाने के बारे में पढ़ते हैं। इसलिए, जब हन्ना शमूएल को लाती है और उसे समर्पित करती है, तो वह खड़ी होती है और वह गीत गाती है, वह इसका जाप करती है जैसा कि हम 1 शमूएल अध्याय 2 में पाते हैं। या जब वाचा का सन्दूक यरूशलेम में लाया जाता है तो 2 शमूएल 6 में वर्णित है, डेविड उसके सामने छलांग लगा रहा है और नाच रहा है और संगीतकार बजा रहे हैं।

हम मानेंगे कि यदि वे खेल रहे हैं और नृत्य कर रहे हैं, तो शायद किसी प्रकार का मंत्रोच्चार हो रहा है। यह निश्चित रूप से नहेमायाह के दिनों में है, जो आपको याद है, डेविड के 500 साल बाद। तो, समय का एक बड़ा अंतराल।

लेकिन नहेमायाह के दिनों में, दीवार के समर्पण के समय, दो गायक मंडली उठती हैं और दीवार के चारों ओर घूमती हैं, इसके साथ ही डेविड के वाद्ययंत्र भी बजते हैं। क्या स्ट्राडिवेरियस जैसे वे उपकरण इतने सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहे थे, या क्या उनका मतलब केवल डेविड द्वारा

डिजाइन किए गए उपकरण थे या ऐसा कुछ, फिर से, उन प्रश्नों में से एक है जिसका उत्तर जानना अच्छा होगा। लेकिन हमारे लिए यह ठीक-ठीक जानना थोड़ा कठिन है।

हमारे पास बाइबिल में एक अनुच्छेद है जो विशेष रूप से हमें बताता है कि भजनों की पुस्तक कैसे या कुछ भजनों का उपयोग कैसे किया गया था। यह 1 इतिहास 16 में है। 1 इतिहास 16 वह कहानी है जो 2 शमूएल 6, पद 19 के बाद घटित होती है।

तो, 2 शमूएल 6, पद 19 दाऊद द्वारा सन्दूक को यरूशलेम में लाने और उसे एक तम्बू में स्थापित करने का अंत है। और फिर कहानी खत्म हो जाती है, फिर उसके साथ मिचेल की घटना घटती है जिसने नृत्य करने के लिए उसका मज़ाक उड़ाया और उसने कहा कि वह अब उसके प्रति एक पति के रूप में व्यवहार नहीं करेगा। और फिर कहानी खत्म हो जाती है।

लेकिन यहां 1 इतिहास 16 में, इतिहासकार सैमुअल के लेखक की तुलना में पूजा में अधिक रुचि रखता है। और इसलिए, वह तीन गायकों और गायक मंडल के निदेशकों और वाद्ययंत्रवादियों और कौन क्या बजा रहा था, के बारे में बहुत विस्तार से बताता है, और वास्तव में, नामों की सूची के साथ अध्यायों और अध्यायों के बारे में विस्तार से बात करता है और गायक मंडली में कौन था और किसका था वे किसके बेटे थे और किसके पोते थे। लेकिन उसके बीच में, अध्याय 16 में, श्लोक 8 से शुरू होकर, हमारे पास एक गीत है जिसे डेविड ने उन्हें गाने के लिए कहा था।

पद 7 कहता है, तब उस दिन दाऊद ने पहिले आसाप और उसके सम्बन्धियोंको यहोवा का धन्यवाद करने को ठहराया। और फिर एक कविता शुरू होती है जो श्लोक 36 तक जाती है। शुरू होती है, हे, यहोवा को धन्यवाद दो, उसके नाम को पुकारो, लोगों के बीच उसके कार्यों को प्रकट करो।

और आप सोच सकते हैं, अच्छा, यह परिचित लगता है। यह परिचित लगना चाहिए क्योंकि अगले 15 छंद भजन 105 के पहले 15 छंद हैं। वे समान हैं।

और फिर जब हम श्लोक 23 पर पहुंचते हैं, और भजन 105 रुक जाता है, वास्तव में, वह भजन 105 के अंत तक नहीं जाता है, वह बस बीच में ही रुक जाता है। अभी कुछ और श्लोक बाकी हैं। श्लोक 23 से शुरू करते हुए, वह भजन 96, एक श्लोक से लेकर श्लोक 13 के पहले भाग तक उद्धृत करता है।

फिर, वह अंत तक नहीं जाता। वह बस रुक गया। मुझे नहीं पता कि वह वहां क्यों रुकता है, लेकिन वह उतनी ही दूर तक चला जाता है।

और फिर श्लोक 34 में, श्लोक 34 भजन 106 का पहला श्लोक है। और श्लोक 35 अंतिम श्लोक है, भजन 106 के अंतिम दो छंद। अब, यह इतिहासकार के कहने का तरीका है, मैं लिखने नहीं जा रहा हूँ पूरी बात बाहर।

आप इसे देखने जा सकते हैं। मैं बस आपको बताने जा रहा हूँ, उन्होंने पहला और आखिरी छंद गाया। आपको यह समझना होगा कि उन्होंने पूरी बात गाई है।



या क्या उन्होंने सचमुच केवल प्रथम और अंतिम छंद गाए? सच में नहीं पता. हालाँकि यह थोड़ा पेचीदा है, लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते। और फिर श्लोक 36 भजन 72,18 के समान है।

तो इतिहास की पुस्तक में एक एकल कविता के रूप में जो प्रस्तुत किया गया है वह वास्तव में है, यदि आप शब्द को माफ कर देंगे, तो भजन की पुस्तक से विभिन्न चयनों के समूह के टुकड़ों से बना एक पेस्टिच है। और यह हमारे पास एकमात्र सबूत है कि कैसे भजनों का उपयोग इज़राइल की पूजा में किया जाता था। और उन्हें दाऊद द्वारा आसाप और उसके भाइयों को सौंपे गए अनुसार गाया गया था, जो यरूशलेम में तम्बू में होने वाली पूजा में लेवीय गायक मंडल के अन्य दो मुख्य गायक नेता थे।

अब बाइबिल में स्तोत्रों की पुस्तक में पाई गई कविताओं के अलावा और भी कई कविताएँ हैं। उदाहरण के लिए, हम उत्पत्ति 49 में, याकूब की उसके पुत्रों और उनके वंशजों के बारे में भविष्यवाणी या निर्गमन 15, मूसा के साथ समुद्र पार करने के बाद समुद्र का गीत पाते हैं। संख्या 22 से 24 तक, आपके पास चार अलग-अलग कविताएँ हैं जो बोर के पुत्र बालाम की भविष्यवाणियाँ हैं।

व्यवस्थाविवरण 32 और 33. और यह वास्तव में पूरी बाइबिल तक फैला हुआ है। तो मोटे तौर पर धर्मग्रंथ का एक तिहाई हिस्सा, पुराने और नए नियम को मिलाकर, कविता है, जिसके बारे में मैं हमारे दूसरे व्याख्यान में एक साथ बात करूंगा।

लेकिन वे सभी उस कहानी के संबंध में लिखे गए हैं जिसमें वे अंतर्निहित हैं। तो, उत्पत्ति 49 में अपने बेटों पर जैकब का आशीर्वाद किसी भजन से नहीं लिया गया है। इज़राइल के बारे में मूसा के गीत, व्यवस्थाविवरण 32 और 33, भजन संहिता की पुस्तक से नहीं लिए गए हैं।

वे स्पष्ट रूप से उस अवसर के लिए लिखे गए थे या उसी अवसर के लिए लिखे गए थे और बाद में लिखे गए थे। इसलिए, हमें यह कहना होगा कि हालाँकि अध्ययन बाइबल और टिप्पणियों में यह पढ़ना बहुत आम होगा कि इस भजन का उपयोग इस उद्देश्य के लिए किया गया था और मंदिर में इस तरह के समारोह के साथ, हम वास्तव में नहीं जानते हैं। हमारे पास यहां जो सबूत हैं वह निश्चित रूप से यह है कि इन भजनों का उपयोग किया गया था, भजन 105, 96, और 106, और शायद 72 का उपयोग उत्सव के भजन के रूप में किया गया था।

लेकिन उससे आगे, हम वास्तव में नहीं जानते हैं। कभी-कभी आप लोगों को उदाहरण के लिए प्रायश्चित्त स्तोत्र के बारे में बात करते हुए देखेंगे। उनमें से सात हैं, भजन 6, भजन 32, भजन 38, भजन 51, भजन 102, भजन 130, भजन 143।

खैर, हम वास्तव में नहीं जानते। फिर, मुझे खेद है अगर ऐसा लगता है कि मैं कह रहा हूँ कि हम वास्तव में नहीं जानते हैं, लेकिन यह बिल्कुल सच है। लोग उन्हें पहचानते हैं और कहते हैं कि ये प्रायश्चित्त स्तोत्र हैं, लेकिन कोई यह भी नहीं जानता कि सबसे पहले उनके बारे में ऐसा किसने कहा था।

कुछ लोग कहते हैं कि ऑगस्टीन पहला व्यक्ति था। कुछ लोग कैसियोडोरस कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं, नहीं, यह एक रब्बी परंपरा थी।

लेकिन इसके ज्यादा सबूत नहीं हैं। और इसलिए, जब हम उन्हें पढ़ते हैं, तो हम कह सकते हैं, अरे हाँ, मैं समझ सकता हूँ कि इन्हें प्रायश्चित्तात्मक भजन क्यों कहा जाएगा। मेरा मतलब है, 32 और 51 निश्चित रूप से बथशेबा के साथ डेविड के पाप के बाद बहुत परिचित भजन हैं।

लेकिन वास्तव में क्या उन्हें कभी एक समूह के रूप में सोचा गया था या नहीं, यह जानना मुश्किल है। तभी वे पहली बार लिखे जा रहे थे। ऐसा नहीं है कि कोई कह रहा है, मैं एक और प्रायश्चित्त स्तोत्र लिखने जा रहा हूँ या जहाँ एक ही विषय एक से अधिक बार दिखाई देता है, जिसे हम समग्र रूप से स्तोत्र में पाते हैं, कि जैसे-जैसे हम स्तोत्र पढ़ते हैं, विषय डूबते और पुनर्जीवित होते रहते हैं।

वही विचार आते रहते हैं। कुछ लोग स्तोत्र 120 से 134 को तीर्थ स्तोत्र कहते हैं या शीर्षक में उनका अनुवाद आमतौर पर सहमति का गीत है। खैर, इसमें पेचीदा बात यह है कि जिस शब्द का अनुवाद सहमति है उसका उपयोग डायल के चरणों के लिए भी किया जाता है।

खैर, सूरज नहीं, बल्कि एक सूरज कदम है ताकि जैसे ही सूरज आकाश में उगता है, छाया कदम दर कदम बदलती रहती है। स्मरण करो जब हिजकिय्याह बीमार था और यहोवा ने उससे कहा कि वह मरने वाला है और उसने प्रार्थना की और यहोवा ने उसे वापस भेज दिया और यशायाह को वापस भेजा और कहा, यहोवा तुम्हें चंगा करेगा। आप क्या संकेत चाहते हैं कि वह सचमुच ऐसा करने जा रहा है? और हिजकिय्याह ने सूर्य से छः कदम पीछे जाने को कहा।

खैर, वह ऐसे डायल के बारे में बात कर रहा है, कि जैसे ही सूरज आकाश में वापस जाता है, छाया डायल के ऊपर चली जाती है। खैर, शायद भजन 120 से 134 वास्तव में पढ़ने के लिए लिखे गए हैं, पढ़े जाने या जपने या दिन के विभिन्न समयों में उपयोग किए जाने के लिए। तो, उनमें से 15 हैं और आपके पास डायल या उसके जैसा कुछ पर 15 चरण हैं।

या शायद इसका मतलब सीढ़ियाँ हैं और कुछ लोग सोचते हैं कि इसका मतलब है कि जब वे मंदिर तक जाने के लिए पहली सीढ़ी चढ़ते हैं तो उन्होंने एक गाना गाया होगा और फिर अगले कदम के लिए अगला और तीसरे कदम के लिए 122 गाया होगा, आदि। तो, यह है एक बहुत दिलचस्प घटना है कि कोई एक विचार लेकर आता है, ओह, इनका उपयोग इसी तरह किया गया था और फिर अचानक वह हमारी समझ बन जाती है। ओह, इसी तरह उनका उपयोग किया गया था और हम बस यह मानकर आगे बढ़ जाते हैं कि उनकी व्याख्या इसी तरह की जानी चाहिए।

इसके खिलाफ कोई सबूत नहीं है, लेकिन इसके सबूत भी काफ़ी मिश्रित हैं। और इसलिए, जब हम इस तरह के कथन पढ़ते हैं कि ये वे भजन हैं जिनका उपयोग इस उद्देश्य के लिए किया गया था, तो हमें वास्तव में इसे बहुत बड़े नमक के साथ लेना होगा और वापस जाकर भजन के पाठ का अध्ययन करना होगा और फिर ऐतिहासिक पुस्तकों का भी अध्ययन करना होगा। देखिये क्या वाकई इसके लिए बहुत सारे सबूत हैं? और हम इसके बारे में कैसे आश्वस्त हो सकते हैं? मैं इस

संक्षिप्त परिचय में कुछ निष्कर्ष सुझाना चाहता हूँ। एक तो यह कि स्तोत्र स्पष्ट रूप से एक व्यवस्थित पुस्तक है।

भजनों को लेखक के नाम के आधार पर समूहीकृत किया गया है। कुछ भजनों को शीर्षक के आधार पर समूहीकृत किया गया है। और ऐसे भजन भी हैं जिन्हें इस आधार पर समूहीकृत किया गया है कि भगवान के लिए किस नाम का उपयोग किया जा रहा है।

तो स्तोत्र के पहले भाग में, स्तोत्र 1 से 41 और फिर 84 से 150 तक, यहोवा नाम सबसे अधिक बार आता है। न केवल इसका उपयोग अधिकांश समय किया जाता है, बल्कि प्रत्येक स्तोत्र में ईश्वर के लिए एलोहिम शब्द की तुलना में याह्वेह अधिक सामान्य है। और फिर भजन 42 से 83 में, ईश्वर शब्द वह शब्द है जो सबसे आम है।

वैसे, जब मैं प्रभु या यहोवा कहता हूँ, तो आपकी अंग्रेजी बाइबिल में यही वह शब्द है जिसका अनुवाद छोटे अक्षरों में किया गया है। तो, यह भगवान के साथ बड़ा एल और फिर छोटा लोअरकेस ऑर्ड नहीं है, बल्कि एल और फिर स्मॉल-कैप ओआरडी है, जो वास्तव में भगवान का नाम यहोवा है। तो, स्तोत्र को भी इसी प्रकार व्यवस्थित किया गया है।

यहोवा खंड और एलोहीम खंड, पूरे प्राचीन निकट पूर्व में ईश्वर के लिए मानक शब्द और फिर दूसरा यहोवा खंड। और हल्लेलुजाह भजन हैं। हल्लेलुयाह शब्द केवल भजन 104 तक ही नहीं आता है।

यह तीन भजनों, 104, 105, और 106 में आता है। फिर यह 111 से 117 तक आता है। और फिर यह 146 से 150 तक नहीं आता है।

बिल्कुल स्पष्ट रूप से, ऐसा प्रतीत होता है, किसी ने निर्णय लिया है कि हम इन हल्लेलुजाह भजनों को एक साथ रखेंगे। और यहाँ तक कि यिश्ई के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएँ फिर से समाप्त होने के बारे में कथन भी हमें दिखाता है कि कोई इसे इकट्ठा कर रहा था और इसे एक साथ रख रहा था। अब, इसका मतलब है कि यह आकस्मिक नहीं है।

आइए इसके बारे में सोचें, आइए इसका उपयोग करें, आइए मैं एक आधुनिक सादृश्य का उपयोग करता हूँ। जब आज एक कवि, या एक लेखक जो लिखता है, मान लीजिए कि निबंध, या लघु कथाएँ, कविताओं या लघु कथाओं या कुछ और का संग्रह प्रकाशित करने का निर्णय लेता है, तो उन्हें यह तय करना होगा कि कविताओं को किस क्रम में व्यवस्थित किया जाएगा। कालानुक्रमिक रूप से किया जाएगा, जो बहुत अच्छा होगा यदि आप एक शोध प्रबंध लिखने जा रहे हैं क्योंकि तब आप एक कवि के विकास का अध्ययन कर सकते हैं और वह विषयों के बारे में कैसे सोचता है या वह चीजों के बारे में कैसे सोचती है।

क्या उन्हें विषय के आधार पर समूहीकृत किया जाएगा? क्या उन्हें पहले शब्द के आधार पर वर्णानुक्रम में समूहीकृत किया जाएगा? क्या उन्हें केवल इस आधार पर समूहीकृत किया जाएगा कि कवि ने उस दिन कैसा महसूस किया था जब उसने इसे लिखा था? या क्या वे सभी 150 ले लेंगे, सीढ़ियों के शीर्ष पर जाएंगे, और उन्हें नीचे फेंक देंगे और जहां भी वे उतरेंगे, वहीं उन्हें

किताब में डाल देंगे। बहुत कम लोग आखिरी करेंगे. अधिकांश लोग पुस्तक को व्यवस्थित करने के लिए कोई न कोई कारण लेकर आएंगे।

कभी-कभी यह सामयिक होगा, जैसा कि मैंने कहा, या कोई अन्य कारण होगा। लेकिन पुस्तक के इस बिंदु पर इस कविता के वास्तविक स्थान के पीछे कोई उद्देश्य होगा। तो, यह इसका अनुसरण करता है और इससे पहले आता है।

और वह बदले में इस का अनुसरण करता है जिसे हम देख रहे हैं और अगले से पहले आता है। और समग्र रूप से पुस्तक में शायद कुछ समान आकार है। हमने देखा है कि यह स्तोत्र के लिए सच है।

और इसका तात्पर्य यह है कि जब हम पढ़ रहे होते हैं, मान लीजिए, आई हाउसमैन या रॉबर्ट फ्रॉस्ट का संग्रह, तो हम उन कविताओं को देखना चाहते हैं जिन्हें फ्रॉस्ट ने उस कविता से पहले और बाद में रखना चुना था जिसे हम पढ़ रहे हैं। क्योंकि किसी कारण से, उसने उन्हें एक साथ रखा। कभी-कभी हम कारण समझ पाते हैं, कभी-कभी नहीं।

लेकिन वहां कुछ कारण है. जब हम भजन संहिता की पुस्तक पढ़ते हैं तो यही बात सच होती है। मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश लोग स्तोत्र को 150 व्यक्तिगत कविताओं के रूप में पढ़ने के आदी हैं।

और हम बस वही चुनते हैं जो हमें चाहिए या दिन के लिए चाहिए या सबसे अच्छा लगता है और उसे पढ़ते हैं और फिर किताब बंद कर देते हैं और अपने रास्ते चले जाते हैं। किसी विशेष भजन को पढ़ना हमारे लिए अधिक उपयोगी होगा। और फिर जब हम इसके बारे में सोच रहे हैं, तो उस भजन को पढ़ें जो इसके पहले आता है और उस भजन को पढ़ें जो इसके बाद आता है।

और यह मान लें कि किसी बिंदु पर, शायद लगभग 3000 साल पहले, किसी ने कहा था, नहीं, भजन 3, भजन 4 से पहले आने वाला है। और भजन 4, भजन 5 से पहले आने वाला है क्योंकि मैं चाहता हूँ कि भजन 5 उसके बाद आए भजन 4. मुझे वहाँ भजन 6 नहीं चाहिए। मुझे इसके आगे भजन 5 चाहिए। और जैसा कि मैंने पहले कहा, कभी-कभी हम देख सकते हैं कि वे जिस तरह से व्यवस्थित हैं, वह क्यों हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, सभी भजन जो राजा के रूप में प्रभु यहोवा के बारे में बात करते हैं, या अधिकांश भजन भजन 91 और भजन 100 के बीच होते हैं। भजन 29 इसका अपवाद है। और कुछ अन्य अपवाद भी हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश भजनों के उस छोटे समूह में आते हैं।

तो, किसी ने कहा, हाँ, यह एक विषय है और हम इन्हें विषयगत रूप से समूहित करने जा रहे हैं। और वास्तव में, अगर हम इसे हिब्रू में कर रहे होते, तो आप देखेंगे कि बहुत सारे कनेक्शन हैं। यह सिर्फ यह विचार नहीं है कि भगवान राजा हैं, बल्कि लगभग 12 भजन हैं जो सभी प्रकार के शब्दों और संरचनाओं और चीजों में विषयगत रूप से बहुत कसकर जुड़े हुए हैं, जिन्हें हम समय के कारण नहीं देख सकते हैं, जो दिखाते हैं कि किसी ने इसे एक साथ रखने पर काफी विचार किया, जिससे पता चलता है कि हमें इसे पढ़ने के तरीके पर काफी विचार करना चाहिए।

और उन्हें ऐसी चीजों के रूप में देखने के बजाय जो बस संकलित या इकट्ठी की गई हैं ताकि हम उन्हें एक-एक करके पढ़ सकें, इसे एक किताब के रूप में सोचें और वास्तव में इसे एक किताब के रूप में पढ़ें। तो, हम पूछ रहे हैं कि यह कविता इसके पहले या बाद की कविता से कैसे संबंधित है? यह स्वीकार करते हुए कि कभी-कभी इसे देखना बहुत कठिन होता है, लेकिन कभी-कभी यह बहुत स्पष्ट होता है। एक और सवाल जो हम खुद से पूछना चाहते हैं, वह यह है कि भजन के समग्र स्वरूप को देखते हुए, इन भजनों से, जो मूल रूप से प्रार्थना और याचिका के भजन हैं और प्रशंसा और धन्यवाद के भजनों के लिए मदद मांग रहे हैं, यह भजन जो मैं पढ़ रहा हूँ वह कैसे फिट बैठता है उस समग्र आकार में? यह उस आकार में क्या योगदान देता है? क्या यह याचिका के भजनों में से एक है? क्या यह स्तुति के भजनों में से एक है? क्या यह प्रशंसा के भजनों के पूरे समूह के बीच याचना का भजन है? वे उसे वहां क्यों रखेंगे? वे केवल एक कविता डालकर एक प्रकार के भजन को क्यों बाधित करेंगे? ये ऐसे प्रश्न हैं जो हमें जो पढ़ रहे हैं उसके बारे में अधिक ध्यान से सोचने पर मजबूर करते हैं, हमें उस पर विचार करने और उस पर विचार करने पर मजबूर करते हैं।

और जैसा कि मैं अंत में कहूंगा, मैं चौथे व्याख्यान के अंत में इस पर वापस आऊंगा, कविता जल्दी से पढ़ने के लिए नहीं होती है। इसका उद्देश्य हमारे दिमाग को चित्रों और विचारों में उलझाना, हमें वास्तविकता के कुछ पहलुओं को देखने का एक अलग तरीका देना और हमारे विचारों को प्रभावित करना है। हो सकता है कि कविता की वास्तविक प्रस्तावात्मक सामग्री, यानी यह कथन, उदाहरण के लिए, भगवान ही राजा है, वास्तव में मुद्दा नहीं है।

शायद इसके बजाय हमें यह सोचने में अपना समय बिताना चाहिए कि यह कविता किस प्रकार इस विचार की खोज करती है कि प्रभु ही राजा है। और इससे मुझे किस प्रकार सहायता मिलती है, शायद मेरे मन से प्रभु राजा के बारे में सोचने के अनुपयोगी तरीकों को दूर किया जा सके और उनके स्थान पर उस पर चिंतन और मनन करने के बाइबिल के तरीकों को अपनाया जा सके। तो कविताएँ स्वयं हमें न केवल धार्मिक सामग्री या नैतिक मार्गदर्शन देना शुरू करती हैं, मुझे लगता है, शायद यही कारण है कि हममें से अधिकांश लोग अधिकांश समय बाइबल पढ़ते हैं। लेकिन इसके बजाय, वे हमारी सोच को ढालना शुरू कर देते हैं।

पॉल हमारे मन को परमेश्वर के वचन से धोने या शुद्ध करने की बात करता है। या वह रोमियों 12 में इस बारे में बात करता है, कि हम दुनिया को अपने ढाँचे में खुद पर दबाव नहीं डालने देते, बल्कि हम अपने दिमागों को नवीनीकृत करते हैं। अच्छा, हम यह कैसे करें? खैर, हम अलग तरह से सोचना सीखते हैं।

हम स्वयं संसार और संसार और उसमें अपनी भूमिका और इसलिए स्वयं भगवान की कल्पना एक अलग तरीके से करना सीखते हैं। मैं यह भी सोचता हूँ कि जब हम स्तोत्र को पढ़ते हैं, जब हम इसे एक किताब के रूप में पढ़ते हैं, तो हम याद करते हैं, इससे हमें यह याद रखने में मदद मिलती है कि चीजों का आकार, मान लें कि ब्रह्मांड, चीजों का आकार अंततः मुक्तिदायक है। स्तोत्र, अपने स्वभाव से, अपने संगठन से, हमें बताता है कि हजारों साल पहले, विश्वासी पहले से ही इस तरह से सोच रहे थे।

ये कविताएँ हमें यह दिखाने के लिए एक साथ रखी गई हैं कि ईश्वर के लिए अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप करने का क्या मतलब है। जिस तरह वह व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करता है, उसी तरह वह इज़राइल के जीवन में, उसके राज्य के काम में, चर्च के निर्माण में भी सामूहिक रूप से हस्तक्षेप करता है। स्तोत्र का आकार ही हमें इसकी याद दिलाता है।

मुझे लगता है कि इसका एक और निहितार्थ है, और वह उस बात से संबंधित है जो मैंने पहले कहा था कि किस प्रकार की कविताएँ हैं। ईश्वर को संबोधित कविताएँ, जो प्रार्थनाएँ हैं, और कविताएँ जो मूल रूप से ईश्वर के बारे में हैं, या ध्यान, चिंतन, या स्तुति के आह्वान हैं। हमारे लिए ईश्वर और उसके साथ अपने रिश्ते के बारे में अलग-अलग तरीकों से सोचना पूरी तरह से उचित है।

यहाँ तक कि कविताएँ भी हमें यह दिखाती हैं क्योंकि ये विभिन्न प्रकार की होती हैं। कभी-कभी उसके बारे में सोचने का हमारा तरीका मुख्य रूप से उससे बात करना होता है। उससे बात करते समय, हम उस व्यक्ति के बारे में, जिससे हम बात कर रहे हैं और उसके साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचना शुरू करते हैं, जिससे हमें अपनी परिस्थितियों को इस दृष्टि से देखने में मदद मिलती है कि वह कौन है।

प्रार्थनाएँ यही करती हैं। दूसरा तरीका जो हम पाते हैं, वह ईश्वर के बारे में सोचने के तरीके हैं, या तो हमें एक विशेष तरीके से उसे जवाब देने के लिए कहते हैं, स्तुति या पूजा या समर्पण या आराधना के लिए बुलाते हैं, या वास्तविकता के कुछ छोटे पहलू को चुनकर, जैसे कि भगवान हमसे संवाद करते हैं। भजन 19 इस बारे में क्या कहता है? वह सृजित हर चीज़ के माध्यम से हमसे संवाद करता है।

वह अपने वचन के माध्यम से हमसे संवाद करता है। तो, भजन 19 स्वयं हमें स्वयं से परे इंगित करता है। यह केवल परमेश्वर के वचन पर ध्यान नहीं है, बल्कि यह अपने लोगों के साथ परमेश्वर के संचार पर ध्यान है।

क्योंकि यह सृष्टि के माध्यम से ईश्वर के बोलने की बात करता है, स्वर्ग ईश्वर की महिमा की घोषणा करता है, इत्यादि, यह सभी प्राणियों के साथ सार्वभौमिक रूप से ईश्वर के संचार की बात करता है। ताकि हम पा सकें कि कवि ने एक बुनियादी विचार लिया है, ईश्वर संचार करता है, और, यदि आप शब्द को क्षमा करें, तो इसके साथ खिलवाड़ किया है। उन्होंने कहा, वास्तव में इसका मतलब क्या है? आइए इस बारे में सोचें।

मैं भजन 19 नहीं पढ़ने जा रहा हूँ। आप इसे स्वयं पढ़ सकते हैं और मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि यह सच है। ताकि भजन हमें सिखाए कि प्रार्थना कैसे करनी है और वे हमें सिखाए कि कैसे सोचना है।

इसलिए, जब हम इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हम इसे हमारी भलाई के लिए लिखी गई पुस्तक के रूप में पढ़ते हैं, जो हमारे आशीर्वाद के लिए ईश्वर की ओर से काव्यात्मक रूप से लिखी गई है।